ISSN 0973-2616

सीएसआईआर समाचार

प्रगति, विकास और आशा

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 2 अंक 9 website: http://www.csir.res.in सितम्बर 2014

इस अंक में

129 किसानों को शक्ति - सीएसआईआर-सीमेरी के छोटी रेंज के ट्रैक्टर को प्रमाणीकरण

130 दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति ने वैज्ञानिक चेतना के भारतीय संदेश की सराहना की

131 सीएसआईआर-राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाओं को सर्वश्रेष्ठ प्रयोगशाला पुरस्कार 2014 प्रदान किया गया

132 सीएसआईआर-आईआईसीबी ने 7वीं राष्ट्रीय आरएनए समूह बैठक का आयोजन किया

133 सीएसआईआर-नीस्ट में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह का आयोजन

134 सीएसआईआर-सीमैप ने खस पर गोष्ठी का आयोजन किया

135 सीएसआईआर-सीरी में राजभाषा सामर्थ्य संवर्द्धन व्याख्यानमाला

138 हिंदी कार्यशाला/सप्ताह/पखवाड़ा

151 सीएसआईआर-सीबीआरआई में री-इन्फोर्सड कंक्रीट/प्रीस्ट्रैस्ड् कंक्रीट तत्वों के इम्पैक्ट बिहेवियर का अध्ययन

किसानों को शक्ति - सीएसआईआर-सीमेरी के छोटी रेंज के ट्रैक्टर को प्रमाणीकरण

कृषि शक्ति – सीएसआईआर-केंद्रीय यांत्रिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर द्वारा विकसित छोटी रेंज के ट्रैक्टर (10-12 हार्स पावर) को कठिन परीक्षण तथा जांच के पश्चात एक कृषि पहिएदार ट्रैक्टर के रूप में सीएमबीआर प्रमाणीकरण प्राप्त हुआ है। कृषिशक्ति के निर्माण के लिए प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण मैसर्स सिंगला कम्पोनेंट्सस प्रा.लि. हावड़ा, पश्चिम बंगाल को दिया गया है।

कृषि शक्ति 12 हार्स पावर जैव डीजल अनुकूल

नया ट्रैक्टर कम कृषि भूमि वाले भारतीय किसानों के लिए एक वरदान सिद्ध होगा। भारत में 85 प्रतिशत कृषि परिवार देश की सम्पूर्ण कृषि योग्य भूमि के लगभग 36 प्रतिशत पर कृषि करते हैं। छोटे भारतीय कृषक के पास साधारणतयः एक हैक्टेयर भूमि से अधिक भूमि नहीं होती है। अतः यह औसत भारतीय किसान के लिए 35 हार्स पावर तथा उससे अधिक शक्ति वाले स्टैण्डर्ड ट्रैक्टरों के द्वारा जो प्रति यूनिट पैदावार को बताते हैं, से मैकेनाइज्ड कृषि करना अत्यंत कठिन है।

अतः 10-12 हार्स पावर शक्ति वाले छोटे जटिल तथा आसानी से प्रबंधित हो सकने वाले ट्रैक्टर जो छोटे तथा बिखरे हुए भूखंडों के लिए पूर्णतः सटीक हैं, के विकास लिए बहुत समय से भारी मांग थी। कृषि शक्ति सीएसआईआर के अन्वेषणों की विरासत में नवीनतम उपलब्धि है जो कृषि के यांत्रिकीकरण को सक्षम बनाती है तथा छोटे किसानों को सशक्त करती है। इसके अतिरिक्त छोटा ट्रैक्टर तथा इसके पाट्र्स बाजार में उपलब्ध डीजल इंजन तथा ट्रैक्टर उपकरणों पर आधारित है।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति ने वैज्ञानिक चेतना के भारतीय संदेश की सराहना की

22-24 मई 2014 को श्वाने, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित चौथी एनुअल अफ्रीकन यूनिटी फॉर रैनेसेन्स कॉन्फ्रेंस में दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति थाबो मबेकी ने उद्घाटन सत्र को सम्बोधित किया।

उद्घाटन के पश्चात वह गौरान्वित क्षण आया जब वैज्ञानिक चेतना पर अनौपचारिक चर्चा के दौरान श्री गौहर रजा, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली के साथ दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति ने वैज्ञानिक रूप से चेतना से परिपूर्ण समाज के सृजन के भारत के स्वप्न पर वार्ता की तथा अफ्रीकी राष्ट्रों के साथ इसकी समरूपता की सराहना करते हुए जर्नल ऑफ साइंटिफिक टैम्पर की प्रति पर निम्नलिखित संदेश लिखा -

आपके उद्यम में निरंतर सफलता के लिए शुभकामनाएं तथा अफ्रीकी के रूप में आपकी सौहार्दता के लिए धन्यवाद।

थाबो मबेकी, 22 मई 2014

जर्नल ऑफ साइंटिफिक टैम्पर एक त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका है जिसका प्रकाशन सीएसआईआर-निस्केयर द्वारा किया जाता है। श्री गौहर रजा इस अनुसंधान पत्रिका के संपादक हैं।

श्री थाबो मबेकी, पूर्व राष्ट्रपति, दक्षिण अफ्रीका

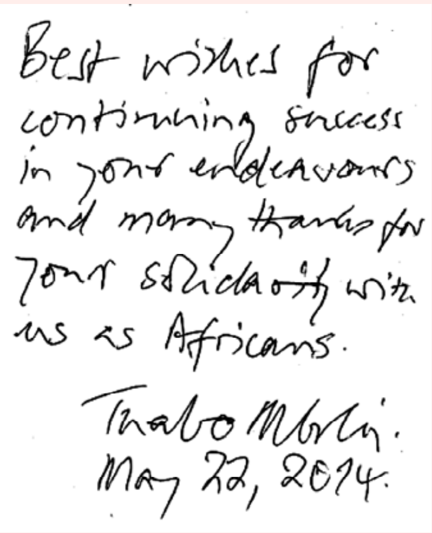

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाओं को सर्वश्रेष्ठ प्रयोगशाला पुरस्कार 2014 प्रदान किया गया

शानदार उपलब्धियों तथा सफलता के साथ तेरह उत्तम वर्षों की अपनी असाधारण यात्रा को परिपूर्ण करने वाली ब्रह्मोस मिसाइल की सफलता पर इंडिया-एशिया जेवी ब्रह्मोस एयरोस्पेस ने 12 जून 2014 को नई दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय में ब्रह्मोस दिवस के रूप में मनाया।

ब्रह्मोस ने भारत को सर्वाधिक तीव्र उच्च प्रक्षेपण वाली सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल के साथ मिसाइल प्रौद्योगिकी में विश्व नेतृत्व प्रदान किया है, जिसे भारत तथा रूस के अनूठे परस्पर सहयोग से बहुत ही कम समय में तैयार किया गया।

सीएसआईआर-एनएएल ने ब्रह्मोस ए के सु-30 एमकेआई मॉडल का 1.5 न्यून गति वायु सुरंग में अंकित समय में विभिन्न परिस्थितियों में वायुयान से मिसाइल के वास्तविक प्रक्षेप पथ का अनुमान लगाने के लिए प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। एनएएल ने कैप्टिव तथा आइसोलेटेड स्ट्रेन गॉज टैस्ट का संचालन ट्राइसोनिक वायु सुरंगों में ब्रह्मोस एयर वर्जन परियोजना के लिए आवश्यक उच्च परिशुद्धता वाले डेटा का जनन करने के लिए भी सफलतापूर्वक किया है। विशेष रूप से सराहनीय बात यह है कि इस प्रकार के डायनामिक स्टोर सेपेरेशन ट्रायल्स को पहली बार देश में सफलतापूर्वक संचालित किया गया है। अपने महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी विकास तथा उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रीय वातंरिक्ष प्रयोगशालाओं को सर्वश्रेष्ठ प्रयोगशाला पुरस्कार 2014 प्रदान किया गया है। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने सीएसआईआर-एनएएल को सर्वश्रेष्ठ प्रयोगशाला पुरस्कार 2014 नई दिल्ली में 12 जून 2014 को ब्रह्मोस दिवस आयोजन के दौरान प्रदान किया।

श्री एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति, भारत सरकार, सीएसआईआर-एनएएल को पुरस्कार प्रदान करते हुए

BEST LABORATORY AWARD 2014

National Aerospace Laboratories, Bangalore

National Aerospace Laboratories (NAL), Bangalore is a premier aviation laboratory entrusted with the task of conducting different types of Wind Tunnel tests and Aerodynamics experiments for BrahMos.

NAL has successfully carried out the drop tests of BRAHMOS-A from Su-30 MKI model in 1.5 m Low Speed Wind Tunnel to estimate the actual trajectory of the missile at different conditions of the aircraft in a record time. NAL has also successfully conducted the captive and isolated strain gauge tests to generate highly accurate data needed for the BRAHMOS Air-Version project in Tri-sonic wind tunnels. It is noteworthy to mention that the Dynamic Store Separation Trials have been successfully conducted for the first time in the country.

For their breakthrough technology development and outstanding contribution National Aerospace Laboratories has been conferred with "Best Laboratory Award 2014".

12th June, 2014
New Delhi

BrahMos

A. Sivathanu Pillai
CEO & MD
BrahMos Aerospace

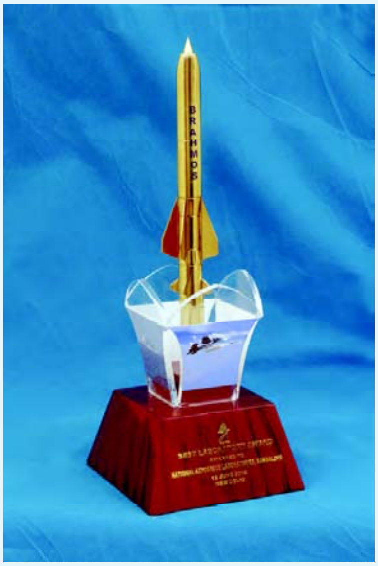

सीएसआईआर-आईआईसीबी ने 7वीं राष्ट्रीय आरएनए समूह बैठक का आयोजन किया

आरएनए जीवविज्ञानियों की 7वीं आरएनए समूह बैठक का आयोजन सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक जीवविज्ञान संस्थान, कोलकाता के डॉ. जे सी रे सभागार में किया गया। इस बैठक का शुभारम्भ प्रो. सिद्धार्थ रॉय, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईसीबी द्वारा किया गया। इस बैठक में भारत के आरएनए अनुसंधान के क्षेत्र में संलिप्त बहुत से वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट समूह ने भाग लिया जिनमें सम्मिलित हैं - प्रो. उमेश वार्ष्णेय, प्रो. उषा विजयराघवन, प्रो. सौमित्रा दास, आईआईएससी, बेंगलुरु; प्रो. तपस कुंडु, जेएनसीएएसआर, बेंगलुरू; प्रो. सुधा भट्टाचार्य, जेएनयू, नई दिल्ली। जाने-माने विषाणु विज्ञानी प्रो. शाहिद जमील, आईसीजीईबी, नई दिल्ली जो डीबीटी-वेल्कम इंडियन एलाइंस के वर्तमान सीईओ भी है, ने बैठक में भाग लिया तथा प्रस्तुतिकरण दिया।

चार प्रमुख वैज्ञानिक सत्र आयोजित किए गए जिनमें से तीन मुख्यतः जीन एक्सप्रेशन के ट्रांसलेशनल नियंत्रण तथा दीर्घ नॉन कोडिंग आरएनए द्वारा इसके नियमन; पोस्ट ट्रांसस्क्रिप्शनल तथा एपीजेनेटिक नियमन; तथा आरएनए प्रक्रिया पर आधारित थे। सम्मेलन के अंतिम दिन एक सत्र संक्रामक एजेंटों के आरएनए जीवविज्ञान पर समर्पित था।

युवा मस्तिष्कों को प्रोत्साहित करने के लिए एक सत्र का आयोजन सम्मेलन के दूसरे दिन किया गया जिसमें युवा आरएनए जीवविज्ञानियों के 10 चयनित मौखिक प्रस्तुतीकरण किए गए। बेहद संवादात्मक पोस्टर सत्र के दौरान लगभग 40 पोस्टर मुख्यतः पीएच डी विद्यार्थियों द्वारा निदर्शन हेतु लगाए गए जिन्होंने अनुभवी आरएनए जीवविज्ञानियों से उत्साहपूर्वक वार्तालाप भी किया।

सभी उपस्थितों ने वर्तमान आरएनए अनुसंधान तथा भारतीय परिपेक्ष्य में इसके परिदृश्यों पर चर्चा की। बैठक का मुख्य केन्द्र नॉनकोडिंग तथा नियामक आरएनए द्वारा पोस्ट-ट्रांसस्क्रिप्शनल जीन नियामन था। नियामक प्रोटीनों द्वारा ट्रांसलेशन प्रक्रिया का नियामन भी चर्चा का एक मुख्य विषय था। इसके अतिरिक्त आरएनए के संरचनात्मक जीवविज्ञान तथा इससे संबंधित कारकों पर भी वार्ता हुई।

आरएनए समूह बैठक के प्रतिभागी

सीएसआईआर-नीस्ट में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह का आयोजन

सीएसआईआर-उत्तर-पूर्व विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (नीस्ट), जोरहाट ने 12 मई 2014 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2014 का आयोजन किया। इस अवसर पर एक विशेष समारोह का आयोजन डॉ. जेएन बरुआ सभागार में किया गया जिसमें प्रो. टी.के. चन्द्रशेखर, सचिव, विज्ञान तथा अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड, डीएसटी, भारत सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यान भी दिया।

इस कार्यक्रम में आमंत्रित अतिथियों, विशिष्ट वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों तथा सीएसआईआर-नीस्ट के सेवानिवृत्त तथा वर्तमान कार्मिकों ने भारी संख्या में भाग लिया। **वैज्ञानिकों की संख्या तथा प्रति वैज्ञानिक निवेश में वृद्धि भारतीय विज्ञान प्रौद्योगिकी तथा अन्वेषण प्रणाली वैश्विक स्थान प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है ताकि भारत की वर्तमान स्थिति को चीन के वर्तमान स्तर पर अद्यतित किया जा सके,** यह बात प्रो. टी.के. चन्द्रशेखर ने अपने व्याख्यान **साइंस टैक्नोलॉजी एंड इनोवेशन लैंडस्केप** के दौरान कही।

प्रो. चन्द्रशेखर ने यह भी निर्दिष्ट किया कि उन भारतीय वैज्ञानिक की संख्या में वृद्धि जो एससीआई अनुसंधान पत्रिकाओं में न्यूनतम एक शोधपत्र प्रकाशित कराते है, समय की आवश्यकता है ताकि 1,70,000 की आधार रेखा संख्या से इसे 7,50,000 तक पहुंचाया जा सके। यह भारत को वैश्विक आर्थिकी में इसकी वर्तमान में प्राप्त नौवें स्थान से पहले स्थान पर पहुंचाने का एक प्रयास है।

इस अवसर पर डॉ. डी रमैया, निदेशक, सीएसआईआर-नीस्ट ने सकल घरेलू उत्पाद तथा प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने सीएसआईआर-नीस्ट की अनुसंधान परियोजनाओं में निधि प्रदान करने वाली एजेन्सियों के योगदान की सराहना की तथा आशा की कि भविष्य में देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के लिए उन्हें और अधिक उदार तथा प्रचुर निधि प्राप्त होगी।

इससे पहले अपने स्वागत सम्बोधन में डॉ. आर.सी. बरुआ, उत्कृष्ट वैज्ञानिक ने प्रौद्योगिकियों के व्यवसायीकरण, पेटेंट, शोधपत्रों, पीएचडी विद्यार्थियों तथा पूर्ण परियोजनाओं के संदर्भ में संस्थान के प्रदर्शन पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के पश्चात प्रो. चन्द्रशेखर ने प्रयोगशाला के विभिन्न विभागों का दौरा किया तथा वैज्ञानिकों से बातचीत की। उसी दिन इन गतिविधियों से पहले प्रो. टी.के. चन्द्रशेखर ने सीएसआईआर-नीस्ट परिसर में नये कन्या छात्रावास का उद्घाटन भी किया।

प्रौद्योगिकी दिवस को अपराह्न 2.00 से 4.30 बजे तक ओपन डे घोषित किया गया जिसमें विद्यार्थियों तथा आम जनता ने संस्थान का दौरा किया।

सीएसआईआर-सीमैप ने खस पर गोष्ठी का आयोजन किया

सीएसआईआर-केन्द्रीय औषधीय तथा सगंध पादप संस्थान (सीमैप), लखनऊ ने खस पर अभी हाल ही में दो दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया। इस गोष्ठी का उद्घाटन डॉ. दिनेश शर्मा, महापौर, लखनऊ द्वारा किया गया तथा इस गोष्ठी में बहुत से किसानों, विद्यार्थियों तथा उद्योगों के प्रतिनिधियों तथा वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

डॉ. शर्मा उद्घाटन सम्बोधन देते हुए

गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए डॉ. दिनेश शर्मा ने सीएसआईआर-सीमैप के प्रयासों की सराहना की तथा कहा कि विभिन्न सगंध तथा औषधीय पौधों में संशोधित प्रौद्योगिकियों का प्रयोग कर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। खस के महत्व पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इस फसल के बहुत से उपयोग हैं तथा इसे बंजर तथा वर्षा बहुल परिस्थितियों में भी उगाया जा सकता है।

डॉ. शर्मा ने बड़े पैमाने पर खस की कृषि आरम्भ करने से पूर्व सगंध पौधों की कृषि तथा उनके तेल निष्कर्षण के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि इन फसलों की कृषि तथा हर्बल उत्पादों का निर्माण ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की समस्या से छुटकारा दिला सकता है।

डॉ. शर्मा ने परिसर में एक पौधे शामी को भी रोपित किया। इससे पहले सभी प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए प्रो. अनिल कुमार त्रिपाठी, निदेशक सीएसआईआर-सीमैप ने कहा कि संस्थान कृषि तथा प्रक्रमण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास गतिविधियों के द्वारा किसानों तथा उद्यमियों की सेवा कर रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस गोष्ठी की संस्तुतियों से सीएसआईआर-सीमैप में अनुसंधान गतिविधियों को अंतिम रूप देने में सहायता मिलेगी।

इस गोष्ठी के तकनीकी सत्रों में उत्पादन का वर्तमान स्तर, खाद्य फसलों के उत्पादन तथा पैदावार को प्रभावित किए बिना प्रचलित फसल प्रणाली में खस का समेकन तथा संशोधित कृषि प्रौद्योगिकियां, आनुवंशिक रूप से संशोधित खस जो वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय तथा प्रौद्योगिकीय आवश्यकताओं, प्रक्रमण प्रौद्योगिकियों, रसायनिक अध्ययनों तथा गुणवत्ता नियंत्रण एवं इसे उगाने वाले कृषकों के मध्य संलग्नता स्थापित करने के संदर्भ से अनुरूप है, के विषय में चर्चा की गयी।

डॉ. शर्मा शामी पौधे का रोपण करते हुए

डॉ. शर्मा हर्बल फार्मूला उत्पादों को देखते हुए

कृषक खस की संशोधित किस्म के पौधों को प्राप्त करते हुए

सीएसआईआर-सीरी में राजभाषा सामर्थ्य संवर्द्धन व्याख्यानमाला

मुख्य अतिथीय उद्‌बोधन देते हुए डॉ. दुर्गादत्त ओझा, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, भूजल विभाग, जोधपुर

सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी में दिनांक 24-25 जुलाई 2014 को राजभाषा सामर्थ्य संवर्द्धन व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। आयोजन की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. चंद्रशेखर ने की। प्रसिद्ध विज्ञान लेखक डॉ. दुर्गादत्त ओझा, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, भूजल विभाग, जोधपुर इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। श्री राकेश कुमार शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली तथा डॉ. पूरन पाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड) इस आयोजन में विशिष्ट अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। साथ ही व्याख्यानमाला में परिषद प्रयोगशालाओं में अपनी सुदीर्घ राजभाषा सेवा के अनुभवों को साझा करने के लिए आमंत्रित वक्ता के रूप में श्रीमती शैलजा गिरि राव, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), आईआईसीटी, हैदराबाद तथा डॉ. रमाशंकर व्यास, पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), एनसीएल, पुणे उपस्थित थे। आयोजन का उद्देश्य संस्थान में हिंदी में कार्य करने के लिए उपलब्ध अनुकूलन वातावरण का लाभ उठाते हुए राजभाषा कार्यों को और अधिक गति प्रदान करना था।

व्याख्यानमाला का उद्‌घाटन 24 जुलाई 2014 को संस्थान के सभागार में हुआ। इस अवसर पर आमंत्रित अतिथियों के अतिरिक्त सभागार में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं सहकर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ आमंत्रित अतिथियों को परंपरानुसार गुलदस्ता भेंट कर किया गया।

उद्‌घाटन सत्र के दौरान प्रसिद्ध विज्ञान लेखक डॉ. दुर्गादत्त ओझा, पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक, भूजल विभाग जोधपुर ने अपने मुख्य अतिथीय उद्‌बोधन में कहा कि सीएसआईआर भारत में केंद्र सरकार द्वारा वित्त-पोषित सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे बड़ा अनुसंधान संगठन है जो अपनी वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय विशेषज्ञता के माध्यम से न केवल भारतीय उद्योगों की सहायता कर रहा है अपितु अपने शोध कार्यों से भारतीय जनमानस को निरंतर सहयोग कर रहा है। उन्होंने कहा कि यदि संक्षेप में कहा जाए तो सीएसआईआर भारत में विज्ञान का सार है। उन्होंने इस अवसर पर सीरी व सीएसआईआर की अन्य प्रयोगशालाओं की शोध उपलब्धियों की सराहना की तथा परिषद को ऐसा जीवंत एवं निरंतर प्रगतिशील संगठन बताया जो अपनी वैज्ञानिक व शैक्षणिक गतिविधियों में विश्व में अपना लोहा मनवा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. श्याम नारायण मिश्र, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड) ने सभागार में उपस्थित संस्थान के सहकर्मियों को मुख्य अतिथि डॉ. ओझा, विशिष्ट अतिथि श्री आर.के. शर्मा तथा डॉ. पूरनपाल का औपचारिक परिचय दिया तथा संस्थान में पधारने के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्थान में राजभाषा गतिविधियों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि संस्थान में समय-समय पर राजभाषा गतिविधियां आयोजित की जाती रही हैं जिनमें हिंदी संगोष्ठियां, हिंदी कार्यशालाएं, अनुवाद-भाषा-हिंदी टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम, नवनियुक्त सहकर्मियों के लिए स्वागत एवं अभिमुखीकरण कार्यक्रम आदि सम्मिलित हैं और इस कड़ी में यह व्याख्यानमाला का आयोजन अपने आपमें भिन्न और विशिष्ट है। उन्होंने आमंत्रित वक्ताओं श्रीमती राव तथा डॉ. व्यास का भी संक्षिप्त परिचय देते हुए हार्दिक स्वागत किया। तदुपरांत डॉ. मिश्र ने कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा तथा आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए सहकर्मियों से इस व्याख्यानमाला के सभी सत्रों में उपस्थित रहते हुए विशेषज्ञों के व्याख्यानों से लाभान्वित होने का अनुरोध किया।

अपने विशिष्ट अतिथीय उद्‌बोधन में डॉ. पूरन पाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), सीएसआईआर मुख्यालय ने परिषद मुख्यालय तथा संबद्ध प्रयोगशालाओं/संस्थानों में राजभाषा की प्रगति व भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सभागार

में उपस्थित सहकर्मियों को संबांधित करते हुए उन्होंने कहा कि सीएसआईआर राजभाषा परिवार की प्रथम पीढ़ी ने सीएसआईआर में राजभाषा को वर्तमान स्थिति तक पहुंचाने में बहुत योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि यद्यपि सीएसआईआर में राजभाषा की स्थिति अन्य सरकारी कार्यालयों वे संगठनों की तुलना में बहुत बेहतर है किंतु अभी भी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना शेष है।

श्री राकेश कुमार शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली ने भी अपने विशिष्ट अतिथीय उद्‌बोधन में स्वयं को संस्थान में आमंत्रित करने के लिए निदेशक महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि संसदीय राजभाषा समिति के सरकारी कार्यालयों के राजभाषा संबंधी निरीक्षणों से इन कार्यालयों में राजभाषा के प्रति गंभीर वातावरण तैयार होता है तथा प्रशासन व अन्य विभागों में हिंदी के कार्यों में गति आती है। परंतु उन्होंने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि अधिकांश कार्यालयों में ऐसा केवल निरीक्षणों के होने के समय केवल कुछ समय के लिए ही होता है। उन्होंने कहा कि हमें यह स्थिति बदलनी होगी। इसी बृहत उद्देश्य को सामने रखकर परिषद से स्वैच्छिक सेवानिवृति के उपरांत वे राजभाषा की सेवा से जुड़ गए। परंतु यह कैसे हो गया, इसका उन्हें भान ही नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि संभवतः यह मुख्यालय में राजभाषा कार्यों से लंबे समय तक जुड़े रहने के कारण हुआ होगा। केंद्र सरकार के कार्यालयों के संसदीय राजभाषा निरीक्षण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि अब हमें यह भूल जाना चाहिए कि यदि हम राजभाषा हिंदी को अनदेखा करेंगे तो कोई नहीं पूछेगा। समिति अब न केवल संसदीय प्रश्नावली के माध्यम से निरीक्षण कर रही है अपितु कार्यालयों में जाकर दिए गए आंकड़ों की जांच भी कर रही है। इसलिए अब राजभाषा की अवहेलना और अपालन करने वाले अधिकारियों/ कर्मचारियों से व्यक्तिगत रूप से भी पूछा जाएगा। उन्होंने कहा कि राजभाषा अनुपालन के संबंध में जारी व्यक्तिशः आदेशों को उल्लंघन अन्य आदेशों की अवहेलना के समान अक्षम्य है। इसके लिए संबंधित अधिकारी/कर्मचारी के विरूद्ध अनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकती है।

विशिष्ट अतिथीय उद्‌बोधन देते हुए डॉ. पूरन पाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (च.ग्रे.) परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली

इस अवसर पर राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए उपलब्ध डिजिटल टूल्स पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इन तकनीकी टूल्स की सहायता से हिंदी में कार्य करना सरल हो गया है। अब हम यूनिकोड या गूगल के माध्यम से सरलता से कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य कर सकते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि हमारे इस प्रयास से सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए कम्प्यूटर पर हिंदी काम करना सरल हो जाएगा और हमारा विश्वास है कि आप सभी इसका लाभ अवश्य उठाएंगे।

व्याख्यानमाला के उद्‌घाटन सत्र के दौरान परिषद मुख्यालय के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ. पूरन पाल ने सीएसआईआर-सीरी में सुदीर्घ राजभाषा सेवा के लिए डॉ. श्याम नारायण मिश्र का संपूर्ण सीएसआईआर परिवार की ओर से सम्मान किया तथा उन्हें सीएसआईआर राजभाषा परिवार की ओर से लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार के रूप में एक मान पत्र तथा शॉल भेंट कर सम्मानित किया। उन्होंने इस अवसर पर सभागार में उपस्थित अतिथियों व संस्थान के सहकर्मियों के समक्ष डॉ. मिश्र की उपलब्धियों की चर्चा की तथा उनके कार्यों की सराहना की।

इसी प्रकार डॉ. श्याम नारायण मिश्र की राजभाषा सेवा तथा हिंदी उत्कृष्ट में लेखन कार्य के लिए मुख्य अतिथि डॉ. दुर्गादत्त ओझा ने भी अपनी ओर से शॉल भेंट कर डॉ. मिश्र को सम्मानित किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सेवानिवृत्ति के उपरांत भी डॉ. मिश्र इसी प्रकार लेखन कार्य के माध्यम से हिंदी से जुड़े रहेंगे।

व्याख्यानमाला के उद्‌घाटन सत्र के दौरान अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए डॉ. चंद्रशेखर ने अतिथियों का धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि डॉ. पूरन पाल ने अपने व्याख्यान में संसदीय निरीक्षण तथा राजभाषा अधिनियम व नियमों को विस्तार से समझाया है जिससे इस संबंध में न केवल स्वयं उन्हें नई जानकारी मिली है बल्कि सभागार में उपस्थित सभी अधिकारी-कर्मचारी भी लाभान्वित हुए होंगे। राजभाषा को अलग और सरल ढंग से बताने-समझाने के लिए

सहकर्मियों को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि श्री राकेश कुमार शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली

उन्होंने डॉ. पूरन पाल को धन्यवाद दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि राजभाषा नीति का अनुपालन एक अत्यंत गंभीर, व्यापक तथा महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने संसदीय निरीक्षण के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि संस्थान के संसदीय निरीक्षण से पूर्व हम सभी में इस संबंध में जागरूकता की कमी थी परंतु निरीक्षण के उपरांत स्थिति में बहुत सुधार हुआ है जो आगामी निरीक्षण में अवश्य परिलक्षित होगा। उन्होंने संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का आह्वान करते हुए उनसे अपने राजभाषा दायित्वों का यथाशक्ति निर्वहन करने के लिए कहा। व्यक्तिशः आदेश पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि यह अत्यंत महत्वपूर्ण आदेश है और शीघ्र ही सभी सहकर्मियों को पुनः जारी किया जाएगा। परंतु उन्होंने जोर देकर कहा कि उनका विश्वास है कि राजभाषा अनुपालन आदेशों के बल पर नहीं अपितु इस व्यक्तिगत दायित्व के रूप में लेने पर ही हो सकता है।

इससे पूर्व उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए व्याख्यानमाला के संयोजक श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी ने सभी अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होने सीएसआईआर राजभाषा परिवार की प्रथम पीढ़ी के सभी हिंदी कर्मियों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनके योगदान को याद किया तथा आशा व्यक्त की कि आगामी पीढ़ियां सीएसआईआर में राजभाषा को नए शिखर तक पहुंचाएंगी। उन्होंने इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. चंद्रशेखर के सुयोग्य मार्गदर्शन व राजभाषा गतिविधियों में सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हमें डॉ. चंद्रशेखर जैसा हिंदी प्रेमी तथा सरल एवं गुणी व्यक्तित्व निदेशक के रूप में मिला है।

सत्र के अंत में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री पी.वी.एल. रेड्डी, प्रमुख, ज्ञान संसाधन केंद्र ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आमंत्रित अतिथियों व निदेशक महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अपेक्षा की कि वे आगामी सत्रों में उपस्थित रह कर विद्वान विशेषज्ञों के व्याख्यानों से लाभान्वित होंगे तथा उनके दीर्घ अनुभव का लाभ उठाएंगे। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने के लिए सभी सहकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर श्री आर.के. शर्मा ने संस्थान के सभी वरिष्ठ अधिकारियों को बताया कि प्रशासनिक प्रकृति के कार्यों को हिंदी व द्विभाषी रूप में करने के लिए डिजिटल टूल्स अत्यंत सरलता से उपयोग किए जा सकते हैं। अतः इनका महत्व व उपयोगिता निर्विवाद है। उन्होंने कहा क यद्यपि राजभाषा कार्यान्वयन का प्रत्यक्ष दायित्व प्रत्येक संगठन/कार्यालय के प्रमुख का है परंतु व्यक्तिगम उत्तरदायित्व तथा जवाबदेही संबंधित अधिकारी/कर्मचारी की ही है। उन्होंने हाल ही में हुए कुछ संसदीय निरीक्षणों का हवाला देते हुए अपने सुदीर्घ प्रशासनिक अनुभव तथा जुटाई गई

उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ. चन्द्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

जानकारी के आधार पर कहा कि अब समिति राजभाषा नीति के उल्लंघन व अवहेलना पर कड़े कदम भी उठा रही है।

विशेष सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. चंद्रशेखर ने कहा कि संस्थान राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए कटिबद्ध है तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्त के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं और इनमें और अधिक तेजी लाई जाएगी। उन्होंने सभी उपस्थित अधिकारियों से इस दिशा में ओर अधिक सक्रिय होने का अनुरोध किया। इस विशिष्ट सत्र के अंत में डॉ. चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी, ने सभी आमंत्रित अतिथियों को संस्थान का स्मृति चिह्न तथा शॉल भेंट कर सम्मानित किया। निदेशक महोदय ने संस्थान के निमंत्रण पर यहां पधारने तथा विभिन्न सत्रों में व्याख्यान दे कर सहकर्मियों को लाभान्वित करने के लिए सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इसके बाद डॉ. श्याम नारायण मिश्र, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड) ने इस विशेष सत्र में संसदीय राजभाषा समिति तथा डिजिटल टूल्स पर महत्वपूर्ण जानकारी देने व अभ्यास कराने के लिए श्री राकेश कुमार शर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने पूर्व वरिष्ठ हिंदी अधिकारियों श्रीमती राव तथा डॉ. व्यास का भी अपनी उपस्थिति से इस आयोजन को गरिमा प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया। साथ ही इस सत्र में उपस्थित रहने के लिए सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिया। अंत में उन्होंने इस संपूर्ण आयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा सभी सहकर्मियों को भी धन्यवाद दिया।

इस प्रकार संस्थान में आयोजित दो दिवसीय राजभाषा सामर्थ्य संवर्द्धन व्याख्यानमाला संपन्न हुई।

सीएसआईआर-सीमेरी में हिंदी कार्यशाला

संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा वर्कशॉप विभाग के कर्मचारियों के लिए वर्ष 2014 के द्वितीय तिमाही, अप्रैल-जून में कार्यशाला का आयोजन दिनांक 27 जून 2014 को संस्थान के सभागृह में किया गया। इसके अंतर्गत दो विषयों (1) दैनिक कार्यों में हिंदी का सरल प्रयोग तथा (2) हिंदी में संचार कुशलता पर व्याख्यान आयोजित किए गए।

सर्वप्रथम वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्रीमती दिना भट्ट ने सबका स्वागत करते हुए हिंदी कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाओं के आयोजन द्वारा कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए उचित मार्गदर्शन देकर, हिंदी में कार्य करने का अभ्यास कराया जाता है। निरंतर अभ्यास के द्वारा ही कार्य निष्पादन में सहजता होती है।

तत्पश्चात् वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक तथा राजभाषा अधिकारी डॉ. आर.एस. शुक्ला ने **दैनिक कार्यों में हिंदी के सरल प्रयोग** विषय पर अपना वक्तव्य दिया। सरल, शुद्ध हिंदी के प्रयोग पर विशेष जोर देते हुए सामान्य रूप से होने वाली अशुद्धियों तथा उचित उपयोग के बारे में जानकारी दी। हिंदी में अनुस्वार चन्द्र बिंदु के महत्व को बताते हुए डॉ. शुक्ला ने बताया कि इनका हिंदी लेखन और उच्चारण में विशेष योगदान होता है। अलग-अलग अक्षरों एवं शब्दों के साथ अनुस्वारों का उच्चारण अलग-अलग हो जाता है।

डॉ. शुक्ला ने हिंदी के उपयोग की अहम भूमिका को बताया तथा इस बात पर जोर दिया कि हमें ज्यादातर प्रचलित एवं परिचित शब्दों का दैनिक जीवन में प्रयोग करना चाहिए। इससे राजभाषा का संचार सबके लिए सरल एवं रुचिकर होगा।

हिंदी में संचार कुशलता विषय पर श्रीमती दिना भट्ट ने बताया कि संचार ही जीवन है, संवाद टूटता है तो, सामाजिक जीवन टूटता है, हिंदी में अपनी बात प्रस्तुत करने के लिए स्पष्ट, सरल, छोटे वाक्य चुनिए। प्रसंग के अनुरूप, श्रोता की मानसिकता, बाह्य परिस्थिति के अनुरूप संवाद से समृद्ध संचार ही सफलता प्राप्त करता है। कार्यशाला के कार्मिकों का अधिकतर कार्य कम्युनिकेशन अर्थात् संचार पर निभर होता है। अतः सफल, सरल संचार कौशल बहुत ही उपयोगी है। कार्यशाला में मशीनों के ज्यादातर नाम अंग्रेजी में होते हैं तो मशीनों के नाम अंग्रेजी में भी बोल सकते हैं। कोई जरूरी नहीं कि उनका हिंदी अनुवाद करके बोलें।

तत्पश्चात कार्यशाला अधीक्षक श्री जयंत पोथाल ने इस प्रकार की कार्यशाला की उपयोगिता बताते हुए हिंदी विभाग को धन्यवाद दिया और सभी कर्मचारियों से हिंदी में कार्य करने का अनुरोध किया।

अंत में श्रीमती दिना भट्ट ने श्री जयंत पोथाल तथा अन्य उपस्थित सभी कर्मचारियों को धन्यवाद देते हुए, राजभाषा कार्यान्वयन में सहयोग देने के लिए अनुरोध किया। इस कार्यशाला में कुल 33 कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं में हिंदी कार्यशाला

सीएसआईआर-एनएएल में दिनांक 25 जून 2014 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें 40 वैज्ञानिकों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ भाग लिया। इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में श्रीमती बी.के. हेमा, हिंदी अधिकारी, इस्ट्राक, बेंगलुरु को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में सर्वप्रथम श्रीमती जयश्री पी.जी., हिंदी अधिकारी ने उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया और प्रतिभागियों से अतिथि वक्ता का परिचय कराया।

श्रीमती हेमा ने प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति नियम, अधिनियम आदि के बारे में विस्तृत विवरण देते हुए कहा कि केन्द्र सरकार के कर्मचारी होने के नाते हिंदी में काम करना जरूरी है। अतः हमारे दैनिक कामकाज में राजभाषा को भी स्थान दें। प्रारंभिक चरण के रूप में सरल शब्दों का प्रयोग करके लिखना शुरू करें। वैज्ञानिक गण जहां भी संभव हो, हिंदी में लिखना शुरू करें। परियोजना दस्तावेज आदि हिंदी में लिखना आरंभ करें। श्रीमती हेमा ने आगे कहा कि हिंदी में लिखना आसान है क्योंकि यह अन्य भारतीय भाषाओं के साथ काफी हद तक मिलती जुलती है। अंग्रेजी में सोच कर अनुवाद करना चाहेंगे तो हिंदी में लिखना कठिन जरूर होगा। क्योंकि दोनों भाषाओं की वाक्य संरचना अलग-अलग है।

कार्यशाला के दौरान सरकारी कामकाज में विशेषकर तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के उल्लेखनीय प्रयोग हेतु भारत सरकार/सीएसआईआर-एनएएल की तरफ से उपलब्ध विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी गइ। आगे श्रीमती जयश्री ने हिंदी माह-2014 के दौरान होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी दी। श्रीमती नेलन तोपनो, सहायक (सा), हिंदी अनुभाग ने कार्यशाला का कुशल संचालन किया।

सीएसआईआर मुख्यालय में हिंदी सप्ताह का आयोजन

डॉ. के.वी. राघवन, सचिव, डीबीटी एवम् डीएसआईआर; डॉ. पूरन पाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (एसजी); डॉ. आर.सी.बुधानी, निदेशक, एनपीएल, डॉ. चन्द्रशेखर, निदेशक, सीरी, पिलानी; डॉ. परमवीर सिंह आहूजा, महानिदेशक, सीएसआईआर; सुश्री एन.जे. सिंह, वित्त सलाहकार; श्री आर.एस. अंतिल, संयुक्त सचिव

परिषद मुख्यालय में दिनांक 08.09.2014 से 12.09.2014 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया एवं 14 सितम्बर को रविवार होने के कारण 15 सितम्बर को हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। परिषद मुख्यालय में वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (एसजी) डॉ. पूरन पाल द्वारा सभी उपस्थित जनों के स्वागत तथा कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालने के बाद सीएसआईआर में हिंदी सप्ताह का उद्घाटन इस अवसर पर आमंत्रित तीन अतिथियों प्रतिष्ठित गीतकार डॉ. राम सनेही लाल शर्मा यायावर श्री धनंजय सिंह एवं हास्य व्यंगकार श्री महेन्द्र शर्मा की उपस्थिति में परिषद के संयुक्त सचिव श्री आर.एस. अंतिल द्वारा किया गया।

तदुपरान्त डॉ. राम सनेही लाल शर्मा ने देश-विदेश में हिंदी भाषा की महत्ता के विषय में विचार व्यक्त किए और हिंदी की जय जयकार स्वरचित और कनाडा में पुरस्कृत गीत को स्वर दिया और सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद श्री महेन्द्र शर्मा ने वातावरण को हास्य रस से ओत-प्रोत करते हुए सभी का भरपूर मनोरंजन किया। श्री धनंजय सिंह जी ने अपने गंभीर स्वर में गीतों का प्रस्तुतीकरण करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

इस अवसर पर कार्यालय के कार्मिकों ने कविता पाठ प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और बेहतरीन स्वरचित एवं पररचित कविताओं का प्रस्तुतीकरण किया। उपस्थित तीनों अतिथि-कवियों ने निर्णायक मंडल के रूप में सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा की और पुरस्कारों की घोषणा की। श्री सुदेश यादव, कनिष्ठ अनुवादक ने इस अवसर पर सभी को धन्यवाद देते हुए सबको जलपान हेतु आमंत्रित किया।

हिंदी सप्ताह के अन्तर्गत काव्य पाठ प्रतियोगिता के अलावा सामान्य

ज्ञान, निबंध, हिंदी भाषा व्यवहार, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें अनेक अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

15 सितम्बर, 2014 को हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। परिषद के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (एसजी) डॉ. पूरन पाल ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.के.वी. राघवन, सचिव, डीबीटी एवम् डीएसआईआर तथा डॉ. परमवीर सिंह आहूजा, महानिदेशक, सीएसआईआर; श्री आर.एस. अंतिल, संयुक्त सचिव; निदेशक, सीरी, पिलानी एवम् निदेशक, एनपीएल, नई दिल्ली; सुश्री एन.जे. सिंह, वित्त सलाहकार; सुश्री सुषमा सिंह, सीवीओ तथा अन्य उपस्थित सभी अधिकारियों एव सहयोगियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। उन्होंने हिंदी दिवस समारोह की आवश्यकता, अनिवार्यता तथा उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए संघ की राजभाषा संबंधी सांविधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा संकल्प, राजभाषा नियमावली, राष्ट्रपति जी के आदेशों, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा सरकारी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षार्थ किए जाने वाले निरीक्षणों आदि के बारे में भी संक्षिप्त परन्तु सारगर्भित जानकारी दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सचिव, डीबीटी एवम् डीएसआईआर डॉ. के.वी. राघवन जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत जैसे विशाल एवम् बहुभाषी देश में राष्ट्र स्तर पर आपसी संवाद के लिए हिंदी जानना अनिवार्य है। साथ ही सामान्य तौर पर देश में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत दक्षिण भारतीयों को हिंदी का तथा उत्तर भारतीयों को दक्षिण भारत की किसी एक भाषा का ज्ञान होना ही चाहिए, अंग्रेजी का उच्च स्तर का ज्ञान होना भी अनिवार्य है। इस प्रकार किसी पढ़े-लिखे पंक्ति को कम से कम तीन भाषाओं में विश्लेषणात्मक क्षमता होनी ही चाहिए क्योंकि घर की भाषा, ड्राइंग रूम की भाषा तथा कार्य-स्थल की भाषा के रूप अलग-अलग होते हैं।

महानिदेशक, सीएसआईआर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्पष्ट किया कि सभी को अपने सरकारी दायित्वों के निर्वहन योग्य हिंदी भाषा का ज्ञान होना ही चाहिए। उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए अपना सरकारी कार्य मौलिक रूप से हिंदी में करने का आग्रह किया।

अंत में हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (एसजी) डॉ. पूरन पाल द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-निस्केयर में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

मंच पर आसीन हैः श्रीमती दीक्षा बिष्ट, कार्यकारी निदेशक; श्री चिराग जैन, मुख्य अतिथि तथा डॉ. जी. मिश्रा, वित्त एवं लेखा अधिकारी

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), नई दिल्ली में दिनांक 15 सितम्बर 2014 से 30 सितम्बर 2014 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। पखवाड़े के आरम्भ में राजभाषा इकाई द्वारा संस्थान के सभी कार्मिकों से अपना कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने की अपील की गयी। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के आयोजन का उद्देश्य न सिफ कार्मिकों को अपना कार्यालयी कार्य हिंदी में करने के प्रति उत्साहित व सजग करना था बल्कि संस्थान की दैनिक गतिविधियों से परे कुछ रचनात्मक तथा नया करने का भी था। जिन प्रतियोगिताओं का आयोजन राजभाषा इकाई द्वारा किया गया, वे इस प्रकार है -

1. हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता
2. वाद-विवाद प्रतियोगिता - इस प्रतियोगिता का विषय **प्रशासनिक सेवाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता** था
3. कविता पाठ प्रतियोगिता - इस बार अधिकतम प्रतिभागियों ने स्वरचित कविता का पाठ किया तथा अपने भावों को कविता के माध्यम से प्रकट किया
4. निबंध लेखन प्रतियोगिता - प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी यह प्रतियोगिता हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए अलग-अलग आयोजित की

गयी। इस वर्ष निबंध के विषय थे-

(1) नारी अस्मिता पर हमलों के मूल कारण

(2) बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं - कारण और निवारण

5. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता - इस प्रतियोगिता में विज्ञान तथा सामान्य ज्ञान तथा हिंदी साहित्य पर आधारित प्रश्न पूछे गए। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों का उत्साह देखते ही बनता था।

6. अन्ताक्षरी प्रतियोगिता - संस्थान के कार्मिकों ने इस प्रतियोगिता में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

संस्थान के सभी वर्गों के कार्मिक यथा वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रशासनिक ने इन सभी प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर 30 सितम्बर 2014 को एक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध युवा हास्य कवि श्री चिराग जैन को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

समारोह का आरम्भ मुख्य अतिथि तथा मंच पर आसीन अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा द्वीप प्रज्जवलित कर किया गया। द्वीप प्रज्ज्वलन के पश्चात श्री विशाल सिंह यादव ने प्रशासन नियंत्रक की ओर से राजभाषा रिपोर्ट प्रस्तुत की। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने पिछले वर्ष की राजभाषा गतिविधियों तथा उपलब्धियों के विषय में जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि इस वर्ष संस्थान की आंतरिक निदेशिका का प्रकाशन किया गया है। उन्होंने बताया कि संस्थान के राजभाषा संबंधी कार्यों की सभी अनुभागों में जांच के लिए मॉनीटरिंग कमेटी का गठन किया गया है जो समय-समय पर सभी प्रशासनिक विभागों/अनुभागों का निरीक्षण करती है तथा राजभाषा कार्यों में सुधार की सम्भावना की जांच कर सुझाव भी देती है। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने संस्थान के कार्मिकों को संचेतना में अपने लेख प्रकाशित कराने तथा राजभाषा कार्यों में अपना योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया तथा भविष्य में अपना सहयोग बनाए रखने के लिए निवेदन किया।

इसके पश्चात श्रीमती दीक्षा बिष्ट, कार्यकारी निदेशक ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने हिंदी को देश की सम्पर्क भाषा का दर्जा देते हुए कहा कि सरकारी कामकाज

दीप-प्रज्ज्वलित करते हुए मुख्य अतिथि

में हिंदी का प्रयोग करने से सरकार और जनता के मध्य परस्पर विश्वास तथा संवाद बढ़ता है। उन्होंने आगे कहा कि मेरा अपना मानना है कि हिंदी में काम करना अत्यंत सुगम है, विशेषकर जब हम इसका प्रयोग मूल लेखन में करें और अनुवाद का सहारा न ले। हमें हिंदी के प्रयोग में आने वाली समस्याओं और हिचकिचाहट के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करना चाहिए तथा कार्यालय में अनुकूल वातावरण बनाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अधिकारी स्वयं हिन्दी को अपनाकर अपने सहयोगियों के लिए मिसाल बन सकते है। आसानी से समझ आने वाली हिंदी का प्रयोग करें तथा हिंदी के विकास के लिए प्रयत्न करने का संकल्प लें।

उन्होंने संचेतना, राजभाषा वार्षिक पत्रिका के संपादक के रूप में संचेतना के

मुख्य अतिथि वार्षिक राजभाषा पत्रिका संचेतना का विमोचन करते हुए

संस्थान की आंतरिक निदेशिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि

उपस्थित जनसमूह

प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को धन्यवाद दिया तथा कार्मिकों को संचेतना के लिए उच्चस्तरीय लेख/कहानी/कविताएं इत्यादि उपलब्ध कराने के लिए भी धन्यवाद दिया।

मुख्य अतिथि महोदय ने राजभाषा इकाई द्वारा प्रकाशित वार्षिक राजभाषा पत्रिका संचेतना के खंड-16 का विमोचन किया। इसके साथ ही उन्होंने संस्थान की नवनिर्मित आंतरिक निदेशिका का भी विमोचन किया।

श्रीमती मीनाक्षी गौड़, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए बताया कि श्री चिराग जैन, हास्य व्यंग्य के क्षेत्र के उभरते हुए युवा कवि हैं। उनकी बहुत-सी रचनाएं पुस्तक रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं/व्यंग्य प्रकाशित होते रहते हैं।

श्री चिराग जैन ने अपनी हास्य व्यंग्य से भरपूर कविताओं/क्षणिकाओं से उपस्थित जनसमूह का मन मोह लिया। उनकी कविताओं में हास्य के साथ-साथ समाज के बदलते संदर्भों तथा संस्कारों पर कटाक्ष भी था। उनकी रचनाओं में परिवार के बदलते मूल्यों/रिश्तों तथा भावनाओं के प्रति विशेष झुकाव था। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से इस तथ्य को उपस्थित श्रोताओं के बीच स्वीकारने तथा संदेश देने में सफल रहे।

इसके पश्चात मुख्य अतिथि, निदेशक महोदया तथा वित्त एवं लेखा अधिकारी ने हिंदी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा वर्षभर हिन्दी में कार्य करने वाले कार्मिकों को नकद पुरस्कार प्रदान किए।

अंत में डॉ. ज्ञानेन्द्र मिश्र, वित्त एवं लेखा अधिकारी ने संस्थान की ओर से मुख्य अतिथि महोदय तथा निदेशक महोदया का धन्यवाद किया तथा भविष्य में भी ऐसे आयोजनों की आशा के साथ सभी का धन्यवाद दिया।

धन्यवाद प्रस्ताव के साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-सीरी में हिंदी सप्ताह का आयोजन

सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी में 8-12 सितंबर 2014 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी कुछ हिंदी प्रतियोगिताएं हिंदी सप्ताह से पूर्व आयोजित की गई और कुछ हिंदी सप्ताह के दौरान। हिंदी सप्ताह से पूर्व 6 लिखित तथा हिंदी सप्ताह के दौरान 6 मौखिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इस प्रकार इस वर्ष कुल 12 प्रतियोगिताएं तथा प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। दिनांक 15 सितंबर 2014 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में कुल इन प्रतियोगिताओं के 72 विजेता सहकर्मियों को पुरस्कृत किया गया। विजेताओं को कार्यकारी निदेशक श्री राहुल वर्मा ने पुरस्कृत किया। पुरस्कार वितरण समारोह में विजेताओं के साथ राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, हिंदी सप्ताह आयोजन समिति के सदस्य तथा अन्य सहकर्मी उपस्थित थे।

इस अवसर पर वर्ष 2013-14 के दौरान संस्थान में लागू 5 राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए 30 सहकर्मियों को भी पुरस्कृत किया गया। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में नियमित सहकर्मियों के साथ-साथ संस्थान में कार्यरत पीजीआरपीई छात्र, परियोजना सहायक तथा प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुए। सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने

पुरस्कार वितरण समारोह में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए श्री राहुल वर्मा, कार्यकारी निदेशक

समापन समारोह में सभागार में उपस्थित सहकर्मी

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी

पुरस्कार वितरित करते हुए निदेशक महोदय

उत्साह के साथ भाग लिया।

हिन्दी सप्ताह का समापन 15 सितंबर 2014 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। संस्थान के कार्यकारी निदेशक एवं प्रमुख वैज्ञानिक श्री राहुल वर्मा ने इस अवसर पर हिंदी प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं तथा संस्थान में लागू राजभाषा प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत भी सहकर्मियों को पुरस्कृत किया। साथ ही हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले प्रशासनिक तथा तकनीकी अनुभाग/प्रभाग को राजभाषा प्रोत्साहन चल वैजयंती प्रदान की गई।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए कार्यकारी निदेशक श्री राहुल वर्मा ने कहा कि हिंदी न केवल हमारी राजभाषा और संपर्क भाषा है अपितु पूरे देश में यह राष्ट्रभाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित है। इस अवसर पर संस्थान में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर संतोष व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान के संसदीय राजभाषा निरीक्षण के उपरांत स्थिति बहुत बेहतर हुई है। उन्होंने कहा कि संस्थान के प्रशासनिक सहकर्मी डिजिटल टूल्स की सहायता से अपना अधिकांश सरकारी कार्य हिंदी के माध्यम से कर रहे हैं परंतु वैज्ञानिक व तकनीकी कार्यों में अभी हिंदी का कम उपयोग किया जा रहा है। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने कहा कि नए-नए डिजिटल टूल्स का उपयोग कर वैज्ञानिक व तकनीकी साथी भी अपना कार्यालयी कार्य हिंदी में सरलता से कर सकते हैं। इस अवसर पर उन्होंने गूगल और माइक्रोसॉफ्ट जैसे निजी संगठनों द्वारा हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की चर्चा करते हुए कहा कि हिंदी पूरे देश में संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित तो है ही किंतु हम सभी कार्यालय में अपना अधिकांश कार्य हिंदी में कर राजभाषा शब्द को सार्थक कर सकते हैं। उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए सभी प्रतिभागियों को अपने प्रदर्शन में और अधिक सुधार लाने का आह्वान किया।

अपने स्वागत उद्बोधन में श्री रमेश बौरा ने बताया कि भारत की संविधान निर्मात्री सभा ने संविधान में 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। तभी से प्रत्येक वर्ष सितंबर माह में भारत सरकार के सभी कार्यालयों में अपनी सुविधानुसार हिंदी माह, हिंदी पखवाड़ा, हिंदी दिवस के रूप में आयोजित किया जाता है। सभागार में उपस्थित साथियों को संबोधित करते हुए उन्होंने बताया कि देश में हिंदी दिवस 14 सिंतबर को तथा विश्व हिंदी दिवस प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। उन्होंने दोनों दिवसों को मनाए जाने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर श्री रमेश बौरा ने वर्ष 2013-14 में राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा किए गए कार्यों की संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने संस्थान में चलाई जा रही प्रोत्साहन योजनाओं तथा हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी तथा सभी सहकर्मियों से अपने दैनिक कार्यालयी कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर कविता पाठ स्वरचित खंड में विजेता सहकर्मियों ने अपनी पुरस्कृत रचनाएं सुनाने का अवसर दिया गया। साथ ही निर्णायकों ने भी अपनी रचनाएं सुनाई।

इस अवसर पर श्री राहुल वर्मा, कार्यकारी निदेशक ने राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रकाशित पत्रिका राजभाषा संदर्शिका (वर्ष 2013-14) का विमोचन भी किया।

अंत में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं प्रोत्साहन पुरस्कार मूल्यांकन समिति के अध्यक्ष डॉ. एस अली अकबर, प्रमुख वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा निदेशक महोदय, आयोजन समिति के सदस्यों तथा इस आयोजन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले लगे सहकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस प्रकार संस्थान में हिंदी सप्ताह 2014 का आयोजन संपन्न हुआ।

सीएसआईआर-निस्टैड्स में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

अतिथियों का परिचय कराती हुई डॉ. (श्रीमती) कविता मेहरा, प्रमुख वैज्ञानिक एवं सह अध्यक्ष, राकास

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली में हिंदी दिवस (14 सितंबर) के उपलक्ष्य में दिनांक 1-15 सितंबर 2014 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इसका उद्घाटन दिनांक 01-09-2014 को संस्थान के निदेशक डॉ. पी. ब्यानार्जी ने किया।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ. पी. ब्यानार्जी, निदेशक, निस्टैड्स

हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी कार्मिकों तकनीकी कार्मिकों तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

दिनांक 15-09-2014 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. कविता मेहरा, प्रमुख वैज्ञानिक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सह-अध्यक्ष ने इस अवसर पर आमंत्रित श्री बलराम अग्रवाल एवं डॉ. भारतेन्दु मिश्र का स्वागत किया एवं उनका परिचय दिया। इस अवसर पर निदेशक

हिंदी के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए श्री बलराम अग्रवाल एवं डॉ. भारतेन्दु मिश्र

पुरस्कार वितरण

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में धन्यवाद प्रस्ताव करते हुए श्री बाल कृष्ण, प्रशासन नियंत्रक

महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा हिंदी के संबंध में विस्तारपूर्वक विचार व्यक्त किए।

विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित श्री बलराम अग्रवाल जी ने हिंदी साहित्य के संबंध में विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए तथा मुख्य अतिथि डॉ. मिश्र जी ने हिंदी के विकास पर चर्चा की तथा हिंदी में स्वरचित कविता पाठ भी किया। इसके पश्चात निदेशक महोदय तथा श्री बलराम अग्रवाल एवं डॉ. भारतेन्दु मिश्र ने हिंदी प्रतियोगितताओं में विजेताओं और सरकारी कामकाज हिंदी में करने वाले संस्थान के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया।

अंत में संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री बालकृष्ण जी ने धन्यवाद प्रस्ताव किया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह सम्पन्न

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की में 12 मई, 2014 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह मनाया गया। इस अवसर पर प्रो. टी.के. दत्ता, एफएनएई एवं एमेरिटस प्रोफेसर, आईआईटी, दिल्ली समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे और उन्होंने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने विभिन्न वैज्ञानिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा वैज्ञानिक कार्मिकों को विज्ञान के सिद्धांतों एवं व्यावहारिक अनुप्रयोगों को समझने में रूचि दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि हमारे देश का भविष्य उज्जवल हो सके। मुख्य अतिथि ने आगे इस बात पर बल दिया कि वैज्ञानिक खोज मानवता के हित में की जानी चाहिए जिससे कि आम जनता के स्वास्थ्य, आय एवं जीवन स्तर में सुधार हो सके।

उन्होंने यूनेस्को द्वारा वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों की उत्पादकता पर, छः यूरोपीय देशों की अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं में कराए गये अध्ययन का ब्यौरा प्रस्तुत किया जिससे कई रोचक बातें पता चलीं और जो प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिकों (अनुसंधान में लगे इंजीनियरों सहित) की उत्पादकता बढ़ाने में सहायक हैं। इनमें कुछ मुख्यतया इस प्रकार हैः (1) परिणामों को लक्ष्य करके प्रदान की गयी सीमित स्वतंत्रता उत्पादकता के लिए प्रेरित करती है,

(2) आंतरिक प्रेरणा होने पर उम्र बाधा नहीं बनती जबकि बाहरी प्रेरणा के मामले में उत्पादकता पुरस्कार प्रणाली पर निर्भर करती है, (3) विविधता, रचनात्मकता में सहायक होती है, (4) सहकर्मियों से अनौपचारिक संवाद बेहतर उत्पादकता में सहायक है, (5) कार्य संतुष्टि उच्च उत्पादकता का मूल है । वैसे ही अध्ययन भारतीय संस्थानों में कराने पर परिणाम में कोई अंतर नहीं पाया गया। इनमें से अधिकांश तथ्य बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं हैं परंतु ये उन परिकल्पनाओं की पुष्टि करते हैं जिनसे बेहतर उत्पादकता हेतु संस्थानों के वातावरण को सुधारने में सहायता मिलती है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रो. टी.के. दत्ता तथा प्रो. श्रीमान कुमार भट्टाचार्य, निदेशक, सीएसआईआर- सीबीआरआई ने दीप प्रज्जवलित कर किया।

प्रो. श्रीमान कुमार भट्टाचार्य, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस की महत्ता को श्रोताओं के समक्ष रखा। उन्होंने बताया कि पोखरण में नाभिकीय परीक्षणों की नियंत्रित श्रृंखला द्वारा नाभिकीय आयुध प्रौद्योगिकी में महारत हासिल करने, स्वदेश विकसित त्रिशूल मिसाइल की परीक्षण फायरिंग तथा स्वदेशी वायुयान हंसा-3 की परीक्षण उड़ान की याद में प्रतिवर्ष 11 मई को देश भर में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया जाता है। भारतीय प्रौद्योगिकी की इन उपलब्धियों को स्वदेश विकसित त्रिशूल, अग्नि एवं पृथ्वी मिसाइलों की परीक्षण फायरिंग से और बल मिला। आज के दिन, जिसने भारतीय वैज्ञानिकों के तकनीकी साहस को सिद्ध करने वाले आज के दिन को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के रूप में याद किया जाता है ताकि युवा पीढ़ी को उच्च लक्ष्य प्राप्त करने तथा शोध की दिशा में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिल सके।

इस अवसर पर, संस्थान कई प्रकाशनों जैसे, सीएसआईआर- सीबीआरआई एनुअल रिपोर्ट 2012-13, द्विभाषी न्यूजलैटर/ भवनिका (जनवरी-मार्च 2014) तथा प्रोसीडिंग्स ऑफ नेशनल वर्कशॉप ऑन इंजीनियरिंग जियोफिजिक्स फॉर सिविल इंजीनियरिंग एण्ड जियो-हैजार्ड्स के हिंदी संस्करण का विमोचन किया गया। डा. अचल कुमार मित्तल, वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया तथा डॉ शौरब जैन, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह सम्पन्न

सीएसआईआर-आईएचबीटी में 11 मई 2014 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। पूरे भारत में यह दिवस 11 मई 1998 को पोखरण में सफलतापूर्वक किए गए परमाणु विस्फोट के स्मरण में मनाया जाता है।

समारोह में जैवप्रौद्योगिकी विभाग के भूतपूर्व सचिव डॉ. सी.आर. भाटिया ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस संभाषण दिया। अपने संबोधन में उन्होंने कृषि के क्षेत्र में उन्होंने कृषि के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के बारे में बताया। उन्होंने प्रौद्योगिकी के विपरीत प्रभाव की ओर भी ध्यान आकर्षित किया तथा कहा कि हरित क्रांति ने देश में भूख की समस्या से तो निजात दिलाया परंतु उसके साथ भूमि की उर्वरता की कमी तथा जल व वातावरण में प्रदूषण की समस्याएं भी सामने आई। इसलिए नवोन्मेष प्रौद्योगिकी तैयार करते समय इन बातों का भी ध्यान रखना चाहिए। आजादी के समग्र 34 करोड़ जनसंख्या जो अब 128 करोड़ पहुंच गई है, को खाद्यान्न की समस्या से नहीं जूझना पड़ा। उन्होंने बताया कि आज गुणवत्ता युक्त जीवन के लिए अच्छे खाद्यान्न, जल, जीविका व ऊर्जा हेतु आधुनिक प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी सामाजिक ग्राह्यता पर आधारित होनी चाहिए। इस दिशा में हमारी जनसंख्या 65 प्रतिशत युवावर्ग अहम भूमिका निभा सकता है।

समारोह की अध्यक्षता सीएसआईआर के पूर्व महानिदेशक एवं विक्रम साराभाई प्रोफेसर प्रो. एस.के. जोशी ने की। अपने संबोधन में उन्होंने संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि इसे आगे बढ़ाने के लिए संस्थान तेज गति से प्रयत्न करेगा। देश तभी विकास कर सकेगा जब हम सही प्रौद्योगिकी को विकसित करके भारत की समस्याओं को हल करने की ओर अग्रसर होंगे। संस्थान में नवीन शोध की अपार संभावनाएं हैं तथा विश्वस्तरीय सुविधा भी उपलब्ध है। अतः विज्ञान के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए जा सकते हैं। उन्होंने आह्वान किया कि हर वर्ष इस दिन संस्थान द्वारा उपलब्धियों को उजागर किया जाना चाहिए।

इससे पूर्व अपने स्वागत भाषण में सीएसआईआर के महानिदेशक एवं संस्थान के

निदेशक डॉ. परमवीर सिंह आहूजा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रौद्योगिकी दिवस के महत्व के बारे में बताते हुए विज्ञान के क्षेत्र में अपार संभावनाओं पर चर्चा की। आईएचबीटी के लक्ष्य के बारे में बताते हुए कहा कि संस्थान किसानों एवं उद्यमियों के लाभ के लिए प्रति इकाई जैव संसाधानों के उत्पादन को बढ़ाने एवं क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नरत है। उन्होंने संस्थान की अन्य गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने युवा विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपनी प्रतिभा को पहचाने तथा नए अभिनव प्रयोग करें। डॉ. आहूजा ने सीएसआईआर की हाल की कुछ तकनीकी उपलब्धियों को उजागर किया जैसे की बायोमास द्वारा ऊर्जा व कम्प्यूटर द्वारा दवाइयों की गुणवत्ता का विश्लेषण। उन्होंने संस्थान द्वारा सॉड एन्जाइम तकनीक के बारे में बताया जिसका लाभकारी प्रभाव स्वास्थ्य, कृषि व खाद्य के क्षेत्र में पड़ेगा।

समारोह में हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपिति डॉ. एस.के. शर्मा, नेशनल प्रोफेसर अनुपम वर्मा सहित नवोदय विद्यालय, पपरोला के छात्रों तथा स्थानीय विश्वविद्यालय, आईबीआरआई एवं अन्य संस्थानों/विभागों के अधिकारियों पालमपुर के गणमान्य व्यक्तियों एवं मीडिया के लोगों ने भाग लिया।

मानव संसाधन विकास समूह, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

उपसचिव, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स, सुश्री वीना जैन, प्रमुख, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स, डॉ. राजेश लूथरा एवं समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री गोपेश गोस्वामी

मानव संसाधन विकास समूह, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स में दिनांक 01.09.14 से 15.09.14 तक हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का उद्घाटन और काव्य-पाठ प्रतियोगिता का आयोजन सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स, अतिथि-गृह में दिनांक 01 सितंबर 2014 को किया गया । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रमुख, भर्ती एवं मूल्यांकन बोर्ड (रैब) श्री प्रमोद कुमार गुप्ता ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री गुप्ता ने इस पहल के लिए आयोजकों को बधाई दी व कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से हम सब का मनोरंजन तो होता ही है पर इनसे कार्यालय में हिंदी में काम करने का अनुकूल वातावरण भी तैयार होता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि जो उत्साह सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स के कार्मिकों ने प्रतियोगिता में भाग लेकर दिखाया है वही उत्साह वापस वे अपनी सीटों पर जाकर भी दिखाएंगे और अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि भावी पीढ़ी को कुछ देने के लिए हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को संभाल और संजो कर रखने तथा उनहें बढ़ावा दिए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा यदि हम संकल्प लें कि हमें अपने संगठन में निर्णय की गुणवत्ता, स्वीकार्यता को बढ़ाना है, उसकी क्षमता का संवर्धन करना है, तो निश्चित तौर पर राजभाषा हिंदी संबंधी सांवैधानिक अपेक्षाएं व अनिवार्यताएं स्वतः पूरी हो सकती हैं। उन्होंने काव्य-पाठ प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को सफल होने की बधाई व शुभकामनाएं दी। उप सचिव, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स, सुश्री वीना जैन व उप सचिव,

प्रसिद्ध हास्य कवि, व्यंग्यकार एवं ग़जलकार श्री दीपक गुप्ता सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स में काव्य प्रतियोगिता में कविता पाठ करते हुए

प्रसिद्ध वीर रस एवं हास्य कवि, व्यंग्यकार व श्री विनय शुक्ल विनम्र सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स में काव्य प्रतियोगिता में कविता पाठ करते हुए

हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए

भर्ती एवं मूल्यांकन बोर्ड श्री रामस्वरूप भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

इस दौरान काव्य प्रतियोगिता एवं निर्णायक-मंडल के कविगणों के प्रस्तुतीकरण भी हुए जिसमें प्रसिद्ध गीतकार व गज़लकार, युवा कवि व व्यंग्यकार श्री दीपक गुप्ता, हास्य कवि, श्री अशोक शर्मा व वीर रस कवि, श्री विनय शुक्ल **विनम्र** ने अपनी चुटीली, गुदगुदा देने वाली तथा देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत रचनाओं से अतिथि-गृह सभागार में उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया। सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स के अधिकारियों/कर्मचारियों/इंजीनियरों/तकनीकी-अधिकारियों आदि ने भी अपनी-अपनी रचनाएं सुनाकर सभी का मनोरंजन करने के साथ-साथ अपनी सर्जनशीलता व आत्माभिव्यक्ति का परिचय दिया। हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान हिंदी में टिप्पण/प्रारूपण; निबंध; शब्दावली (भाषांतरण); वाद-विवाद व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया जिसमें सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स के अधिकारियों/कर्मचारियों/इंजीनियरों/तकनीकी-अधिकारियों आदि ने उत्साहित होकर प्रतिभागिता की।

दिनांक 15 सितंबर 2014 को आयोजित हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रेडियो, टीवी, फिल्म एवं समाचार-पत्रों आदि के लिए लिखनेवाले, अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी कार्यशालाओं/संगोष्ठियों के आयोजक व संचालक, राजभाषा हिंदी में व्याख्यान देने के सिलसिले

श्री रविन्दर मेंहमी, हिंदी अधिकारी, सीएसआईआर कार्यक्रम का संचालन करते हुए

में सिंगापुर, मलेशिया, थाइलैंड, बाली, हॉलैंड(यूरोप), सूरीनाम, त्रिनिडाड(दक्षिण अमेरिका) की यात्रा कर चुके, भारतीय दर्शन, संस्कृति के प्रचारक पूर्व प्रबंधक, बीएचईएल, श्री गोपेश गोस्वामी को आमंत्रित किया गया था। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता, प्रमुख, मानव संसाधन विकास समूह, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स, डॉ. राजेश लूथरा ने की।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री गोस्वामी ने कहा कि उनका सौभाग्य है कि उन्हें सीएसआईआर जैसे उत्कृष्ट वैज्ञानिक संस्थान के वैज्ञानिकों व अन्य कार्मिकों को संबोधित करने का अवसर मिला है। उन्होंने श्रोताओं को अंग्रेजी भाषा के इतिहास से अवगत कराते हुए बताया कि अंग्रेजी भाषा का उद्गम स्रोत मूलतः जर्मन भाषा है और किसी समय अंग्रेजी भाषा को कुलीन वर्ग द्वारा बोली जाने वाली भाषा नहीं माना जाता था। उन्होंने इस अवसर पर बोलते हुए श्री गोस्वामी ने श्रोताओं को भी बताया कि अंग्रेजी भाषा का शब्द भंडार हिंदी भाषा की तुलना में काफी सीमित है। उन्होंने कहा कि भारत और अन्य देशों में 60 करोड़ से भी अधिक लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम की अधिकतर और नेपाल की कुछ जनता हिंदी बोलती है। उन्होंने इस बात की ओर भी ध्यान आकर्षित किया कि राजभाषा हिंदी में काम करने में आने वाली सबसे बड़ी बाधा इच्छा शक्ति की कमी है। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी अब व्यापार की भाषा बन चुकी है। भारत से व्यापार करने वाले बहुत से चीनी और जापानी भाषा-भाषियों ने हिंदी सीखना आरंभ कर दिया है। उन्होंने देश में हिंदी न्यूज़ चैनलों और हिंदी के अन्य मनोरंजन चैनलों की आई बाढ़ पर भी श्रोताओं का ध्यान आकर्षित किया। श्री गोस्वामी ने बताया कि अंग्रेजी अखबारों की तरह हिंदी का कोई अखबार पाठकों को निःशुल्क मुहैया नहीं कराया जाता।

भारतीय प्रशासनिक सेवा में चुन कर आए अधिकारियों के लिए भी हिंदी के ज्ञान की अनिवार्यता का भी श्री गोस्वामी ने अपने व्याख्यान में उल्लेख किया। अपने व्याख्यान के अंत में श्री गोस्वामी ने अतिथि-गृह में उपस्थित सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स के सभी कार्मिकों से राजभाषा हिंदी में काम करने का आह्वान किया।

तत्पश्चात प्रमुख, मानव संसाधन विकास समूह, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स, डॉ. राजेश लूथरा ने अपना अध्यक्षीय भाषण आरंभ करने से पहले सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है और हमें बातचीत के दौरान इसका अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने हिंदी भाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी सम्मान दिए जाने पर ज़ोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी में काम करते समय हमें अन्य भाषाओं के शब्दों का भी उपयोग करना चाहिए। उन्होंने अपने जर्मनी के दौरे का उल्लेख करते हुए बताया कि वहां बहुत कम लोग अंग्रेजी भाषा जानते हैं। देश के लगभग सभी लोग अपनी भाषा बोलने और उसी में काम करने में गौरव महसूस करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि निःसंदेह अंग्रेजी महत्वपूर्ण भाषा है पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपनी भाषा को एकदम भूल जाएं। उन्होंने कहा कि भाषाएं कभी भी छोटी या बड़ी नहीं होती। उन्होंने संस्कृत भाषा को सभी भारतीय भाषाओं की जननी बताते हुए उसके गौरवशाली इतिहास के बारे में भी श्रोताओं को जानकारी दी। अपने व्याख्यान के अंत में डॉ. लूथरा ने भविष्य में भी ऐसे आयोजन किए जाने का अनुरोध किया।

मुख्य अतिथि व प्रमुख, मानव संसाधन विकास समूह, सीएसआईआर कॉम्प्लेक्स, डॉ. राजेश लूथरा के प्रेरणास्पद व्याख्यानों के बाद मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं मे पुरस्कार प्राप्त करने वाले और वर्ष भर अपना काम हिंदी में करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया।

समारोह के अंत में हिंदी अधिकारी रविन्दर मेंहमी ने अतिथि-गृह सभागार में उपस्थित जनसमूह से आग्रह किया कि वे अपना अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने का संकल्प लें, साथ ही उन्होंने उक्त कार्यक्रम के आयोजनादि से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से संबद्ध सभी के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त किया। हिंदी सप्ताह उद्घाटन व समापन कार्यक्रम का मंच-संचालन हिंदी अधिकारी, रविन्दर मेंहमी ने किया।

सीएसआईआर-आईएमएमटी में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

सीएसआईआर-खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ ने हिन्दी पखवाड़ा समारोह 1 से 15 सितम्बंर, 2014 के दौरान बड़ी धूमधाम एवं राष्ट्रीय गरिमा के साथ मनाया। इस समारोह के आयोजन के लिए डॉ. आर. सक्तिवेल, वैज्ञानिक को संयोजक के रूप में नामित किया गया इस पखवाड़े के दौरान संस्थान के कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए हिन्दी में कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। कर्मचारियों के बच्चों के लिए कविता पाठ एवं निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में लगभग 60 बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

कर्मचारियों के लिए निबंध प्रतियोगिता, राजभाषा व टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता एवं हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में पिछले वर्षों की तुलना में प्रतिभागियों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई। यह बढ़ोतरी संस्थान में राजभाषा की प्रगति का संतोषजनक सूचक है।

इस पखवाड़े के आयोजन के क्रम में पॉच व्याख्यानों का आयोजन किया। पहले व्याख्यान में डॉ. डी पी दास, वैज्ञानिक ने बड़े ही रोचक ढंग से ध्वनि प्रदूषण एवं नियंत्रण पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री एस के पाण्डेय, तकनीकी अधिकारी ने वेबसाइट को द्विभाषिक रूप में अद्यतन करने में सहकर्मियों का योगदान, मशीनी अनुवाद तथा लिप्यांतरण से संबंधित विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. नीलोत्पतला प्रधान, वैज्ञानिक ने अपने शोध क्षेत्र से संबंधित सूक्ष्म शैवाल का जैव प्रौद्योगिकी महत्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद डॉ. सत्यसजीत रथ, वैज्ञानिक ने ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम से सभी उपस्थित श्रोताओं को परिचित कराया और अंत में डॉ. मनीष कुमार, वैज्ञानिक ने पर्यावरण प्रदूषण मूल्यांकन तथा उड़न राख के विषय में विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किया।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह 15 सितम्बर, 2014 को अपरान्हन 4.30 बजे सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया। प्रो. बी.के. मिश्र, निदेशक ने इस समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा के स्वरूप, इसके महत्व तथा इसकी नीति एवं अनुपालन के प्रति जिम्मेदारी का उल्लेख किया। पिछले वर्ष में हुई प्रगति का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हमें कम्प्यूटरों पर उपलब्ध द्विभाषिक सुविधा का लाभ उठाते हुए और अधिक मात्रा में हिन्दी में अपने कार्य करने का प्रयास करना चाहिए विशेष कर हिन्दी पत्राचार में क्योंकि संसदीय राजभाषा समिति इस विषय पर विशेष बल देती है। संस्थान के प्रशासन नियंत्रक श्री पी. के.राय, ने राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक प्रावधानों पर विस्तार से चर्चा की तथा संस्थान के सभी कर्मचारियों से हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए आह्वान किया। उन्होंने अपने सारगर्भित भाषण में विज्ञान के प्रचार एवं प्रसार में हिन्दी की भूमिका के महत्व से लोगों को अवगत कराते हुए कहा कि हमें विज्ञान को प्रयोगशाला तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि इसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए राजभाषा हिन्दी का उपयोग करना चाहिए।

अध्यक्षीय भाषण के बाद माननीय मुख्य अतिथि श्रीमती सविता दास, प्रकाशक, विश्वमुक्ति पत्रिका ने कहा कि हिन्दी एक सर्वग्राह्य भाषा है और इसे भारत के सभी प्रांतो के लोग इसे आसानी से समझ जाते हैं इसे कार्यालयीन प्रयोग के अतिरिक्त अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए उपयोग करना चाहिए, तभी इसका व्यापक प्रचार-प्रसार होगा। विदेशों में भी हिन्दी का बहुत तेजी से प्रचार-प्रसार हो रहा है और हिन्दी अंतरराष्ट्रीय भाषा का स्वरूप ग्रहण कर ली है। अंत में उन्होंने कहा कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली राजभाषा हिन्दी, वैज्ञानिक शोध कार्यों को आम जनता तक पहुँचाने के लिए सवर्था उपयुक्त एवं सक्षम भाषा है और इसका हमें सभी क्षेत्रों में अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए।

तदुपरांत राजभाषा कर्यान्वयन समिति के सचिव श्री टी वेंकट राजु ने संस्थान में राजभाषा हिन्दी की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि संस्थान में हिन्दी में काम करने के लिए सभी आधारभूत सुविधाएं यथा द्विभाषी प्रपत्र, हिन्दी अग्रेषण पत्र तथा कम्प्यूटरों पर हिन्दी सॉफ्टवेअर की उपलब्धता के कारण हिन्दी में किए जा रहे कार्यों की मात्रा में वृद्धि हुई है। प्रशासन के कार्यों के अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। परियोजना रिपोर्ट के प्राक्कथन को अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी में भी प्रेषित किए जा रहे हैं। जन मानस तक, संस्थान में किए जा रहे अनुसंधान एवं विकास कार्यों को राजभाषा हिन्दी में पहुँचाने के उद्देश्य से पिछले पॉच वर्षों से राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन किया जा रहा है और अब तक इसके 11 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।

मुख्य अतिथि श्रीमती सविता दास एवं प्रो. बी. के. मिश्र, निदेशक के कर-कमलों से पुरस्कार विजेताओं को प्रमाणपत्र एवं नगद पुरस्कार प्रदान किए गए। इस समारोह का संचालन डॉ. आर सक्तिवेल, वैज्ञानिक ने बड़ी कुशलता से किया और उनके द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ उपस्थित जनों के करतल ध्वनि के बीच समारोह सम्पन्न हुआ।

सीएसआईआर-सीबीआरआई में री-इन्फोर्सड कंक्रीट/प्रीस्ट्रैस्ड् कंक्रीट तत्वों के इम्पैक्ट बिहेवियर का अध्ययन

प्रबलित कंक्रीट/पूर्व प्रतिबलित कंक्रीट संरचनाओं को अपने जीवन काल में, कभी न कभी समाघात के कारण चरम गति भारण अवस्थाओं का सामना करना पड़ता है। विशेष उदाहरणों में वाहन दुर्घटना के कारण पुल संरचनाओं को होने वाले समाघात, समुद्र एवं समुद्री तटीय संरचनाओं को हिम से होने वाले समाघात रॉक फाल के कारण रॉक रोड को होने वाले समाघात तथा संरक्षित संरचनाओं को प्रक्षेपित यान अथवा वायुयान से होने वाले समाघात शामिल हैं। हाल के वर्षों में, समाघातभार के अंतर्गत कंक्रीट प्रबलित संरचनाओं के निष्पादन एवं सुभेद्यता का आकलन करना बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। अधिकांश इंजीनियर अभिकल्पन, निर्धारण एवं सुरक्षा जांच के लिए संख्यात्मक मॉडलों का सहारा ले रहे हैं और इन मौडलों की पुष्टि में सहायता हेतु भौतिक परीक्षणों से प्राप्त उच्च गुणवत्ता के डाटा की आवश्यकता है।

इस परियोजना का उद्देश्य प्रबलित कंक्रीट/पूर्व प्रतिबलित कंक्रीट तत्वों का निष्पादन आधारित समाघात प्रतिरोध अभिकल्पन करना है। इस परियोजना का विस्तार क्षेत्र निम्नवत है :-

- ड्रोप वेट इम्पैक्ट परीक्षणों द्वारा आर.सी./पी.सी. तत्वों (सामान्य सामर्थ्य कंक्रीट) के इम्पैक्ट बिहेवियर का प्रायोगिक अध्ययन।
- इम्पैक्ट रेस्पोंस डाटा तैयार करने के लिए जिसे कि प्रयोगों में शामिल नहीं किया गया है, नॉन लीनियर एफईएम विश्लेषण द्वारा आर सी तत्वों के इम्पैक्ट बिहेवियर का पूर्वानुमान।
- निष्पादन आधारित डिजाइन विधि विकसित करने के लिए आर सी/पीसी तत्वों के इम्पैक्ट एनर्जी, स्टैटिक फ्लैक्सुरल कैपेसिटी, अधिकतम विक्षेप एवं अवशिष्ट विक्षेप के बीच संबंध स्थापित करना।

उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, 2.5 मीटर तक विभिन्न ऊंचाइयों से भार गिराने हेतु एवं उसके प्रभाव (विक्षेपण, सपोर्ट रिएक्शन एवं विकृति बनाम समय) को दर्ज करने के लिए एक यंत्रीकृत इम्पैक्ट लोडिंग टैस्ट सैटअप डिजाइन किया गया है। बीम की लोडिंग के लिए एवं विकृतिमापी आधारित लोड सैल को स्थापित करने के लिए एक सहायक प्रणाली का विशेष रूप से डिजाइन किया गया है।

ड्रोप वेट प्रयोग करने के लिए इम्पैक्ट लोडिंग सिस्टम को, डाटालोगर, लोड सैल तथा बीम के साथ लेजन विस्थापन संवेदकों सहित, आकृति 1-ब में दर्शाया गया है। जैसा कि आकृति 1-ब में दर्शाया गया है एक विद्युत चुम्बक के साथ 100 किग्रा भार जोड़ा जाता है और उसे दूसरी तरफ एक स्टील पोर्टल फ्रेम के ऊपरी सिरे पर लगे तार के हुक से जोड़ दिया जाता है। तार के हुक की सहायता से भार को 2.5 मीटर तक अपेक्षित ऊँचाई तक उठाया जा सकता है और विद्युत चुम्बक की सहायता से नीचे छोड़ा जा सकता है। विद्युत तार के हुक के पार्श्व संचलन को रोकने के लिए, हैमर को परीक्षण नमूने के एक दम ऊपर उठाए रखने हेतु 50 मिमी व्यास के दो गाइडिंग पाइप उपयोग में लाए जाते हैं। ड्रोप हैमर, 520, 220 मि. आकार का आयताकार एवं 90 मिमी गहराई का होता है। हैमर का स्ट्राइकिंग सर्फेस बेलनाकार एवं 90 मिमी व्यास का तथा 100 मिमी ऊँचाई का होता है।

आकृति 1 (अ): बीम की सहायता प्रदान करने वाली प्रणाली

आकृति 1 (ब): प्रायोगिक सैटअप

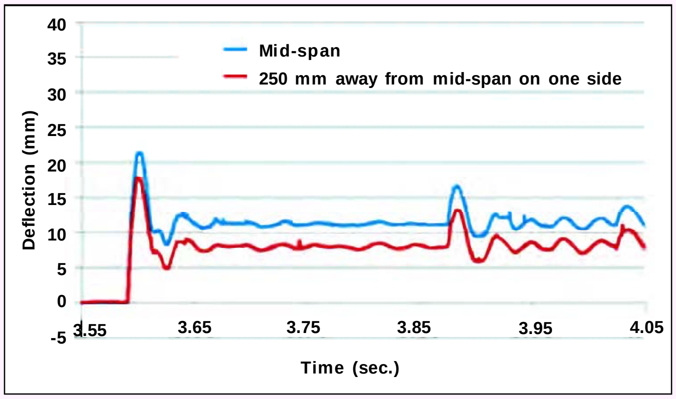

आकृति 2: 100 किग्रा. इम्पैक्टर भार 1 मीटर की ऊंचाई से गिराने पर बीम का प्रारूपी विक्षेपण-समय वक्र

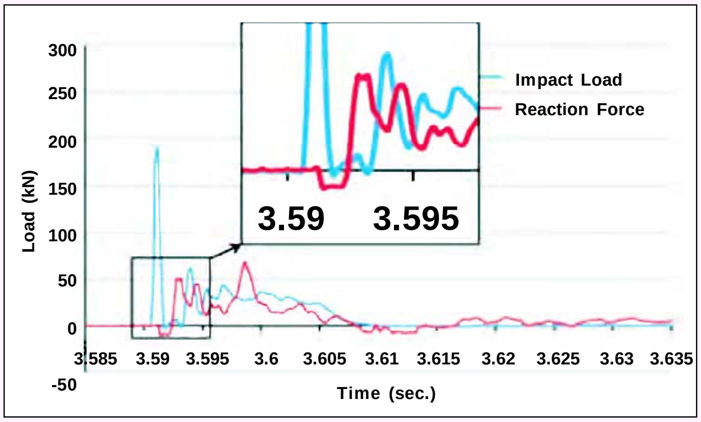

आकृति 3: 100 किग्रा. इम्पैक्टर भार 1 मीटर की ऊंचाई से गिराने पर बीम का प्रारूपी इम्पैक्ट भार एवं रिएक्शन प्रतिक्रिया बल (फोर्स) है।

नमूने का विक्षेपण, लेसर विस्थापन संवेदकों की सहायता से किया जाता है जिसे एक दम नीचे एवं बीम के मध्य भाग से 250 मिमी पर रखा जाता है। लेजर विस्थापन संवेदकों से अधिकतम 125 मिमी विक्षेपण को मापा जा सकता है। प्रतिक्रिया बलों के आमापन हेतु प्रायोगिक सैटअप में क्रमशः 500 केएन तथा 1000 केएन क्षमता के 2 लोड़ सैल लगाए गए हैं और 500 केएन क्षमता का एक और लोड सैल, कोन्टैक्ट फोर्स को मापने के लिए इम्पैक्टर के साथ लगाया गया है। ये संवेदक लैबव्यू 6 सॉफ्टवेयर की सहायता से नेशनल इंस्ट्रूमेंट्स की डाटा संग्रहण प्रणाली से जुड़े हैं।

आकृति 2 में एक प्ररूपी विक्षेपण-समय ग्राफ दर्शाया गया है। इम्पैक्ट के पश्चात बीम में कंपन होने के कारण, ग्राफ में कई पीक देखे जा सकते हैं। आकृति 3 में यह देखा जा सकता है कि अधिकतम इम्पैक्ट लोड तथा अधिकतम रिएक्शन फोर्स के बीच एक टाइम लैग (0.002 सेकेंड) है। यह इस कारण हो सकता है क्योंकि इम्पैक्ट के पश्चात प्रतिबल तरंग (स्ट्रैस वेब) अंतिम सपोर्ट तक पहुंचने में समय लगाती है।

अधिकतम एवं अवशेषी विक्षेपण, इम्पैक्ट ऊर्जा बढ़ने पर बढ़ता है और प्रतिबलन प्रतिशत में वृद्धि होने प्रकम हो जाता है, जैसा कि आकृति 4 में देखा जा सकता है। अधिकतम इम्पैक्ट फोर्स, प्रतिबलन प्रतिशत में वृद्धि होने पर बढ़ता है जैसा कि आकृति 5 में दिखाया गया है। इम्पैक्ट लोड के मामले में इम्पैक्ट लोड़िग के अस्थायी एवं सामान्यतः 1 स्थानीय पैटर्न के कारण, संरचनात्मक मैम्बर्स, स्टैटिक लोड अवस्था की तुलना में, भिन्न व्यवहार करते हैं। सामग्रियों के गतिक मान भी स्थौनिक भारण (स्टेंटिक लोडिंग) अवस्था की तुलना में, भिन्न हो सकते हैं। जाँच से पता चला है कि कंक्रीट एवं इस्पात दोनों प्रतिबल/विकृति दर संवेदनशील हैं, तथा प्रतिबल/विकृति दर में वृद्धि होने पर, दोनों की तनन एवं संपीड़न सामर्थ्य तथा यंग मॉडयूल्सर में वृद्धि हो सकती है।

इस क्षेत्र में आगे संभावित अध्ययन इम्पैक्ट क्षेत्रों में, रस्पोंस बिहेवियर के लिए नॉनलीनियर एफईएम विश्लेषण, पूर्वदाबित कंक्रीट तत्वों पर प्रयोग, इम्पैक्ट एनर्जी फ्लैक्सुरल कैपेसिटी के बीच संबंध स्थापित करना, इम्पैक्ट बिहेवियर पर निष्पादन आधारित डिजाइन विधि तैयार करने के लिए अधिकतम एवं अवशेष विक्षेपण पर अध्ययन शामिल हैं।

निस्केयर
NISCAIR

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग,
नई दिल्ली-110012 के लिए दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।
संपादकः दीक्षा बिष्ट; अनुवादः मीनाक्षी गौड़
प्रोडक्शनः सुप्रिया गुप्ता; डिजाइन एवं ले आऊटः सरला दत्ता; कम्पोजिंगः कृष्णा
फोनः 25848702, 25846301, 25846303, 25842990, 25846304-7/361 फैक्सः 25847062
ई-मेलः deeksha@niscair.res.in वेबसाइटः http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें

DELHIN/2013/52141